International Journal of Applied Research 2021; 7(3): 133-135

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(3): 133-135
www.allresearchjournal.com
Received: 04-01-2021
Accepted: 06-02-2021

रोशन कुमार
शोधार्थी, स्नाकोत्तर हिन्दी विभाग,
वीर कुवँर सिंह विश्वविद्यालय
आरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रोशन कुमार
शोधार्थी, स्नाकोत्तर हिन्दी विभाग,
वीर कुवँर सिंह विश्वविद्यालय
आरा, बिहार, भारत

प्रो० श्याम मोहन अस्थाना के सामाजिक नाटकों की कथावस्तु

रोशन कुमार

सारांश
श्याम मोहन अस्थाना के नाटकों को कथ्य की दृष्टि देखे तो कई तरह के नाटक लिखे है – राजनीतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर आधारित, वैचारिक नाटक इत्यादि। उनके सामाजिक नाटकों पर नजर डाले कथावस्तु मुख्यरूप से मध्यवर्गीय लोगों पर आधारित है।'यह भी सच है' में पागलखाने में ईलाज के बाद ठीक होने पर जब चेतन बाहर जाना चाहता है तो उसकी स्वार्थी परिवार वाले, उसके धन के लोभ में उसे पागल करार देकर उसे ले जाने से इनकार कर देते हैं।'मेरा नाम मथुरा है नाटक में अस्थानाजी ने झुनिया को एक भारतीय नारी के प्रतीक के रूप में लिया है। वह अपना नाम झुनिया न बताकर कर ''मेरा नाम मथुरा है'' बताती है। मथुरा एक आदिवासी लड़की है, जिसके साथ एक गाँव के थाने में बलात्कार किया गया था।'तीन सौ सीसी खून' एक ब्लड डोनर की कथा है। गनेस नाम का एक मजबूर इंसान है। अपने खून का सौदा करके अपना, अपनी माँ का पेट पालता है।'नागफनी का डाल' एक मध्यवर्ग की कथा है। मनीषा कॉलेज में प्राध्यापिका है। वह अविवाहित है। विवाह करना उसके लिए समस्या है, अगर वह विवाह कर लेती है तो घर का खर्च चलना मुश्किल हो जाएगा, शायद असंभव। एक बात और है कि विवाह के लिए रुपये की आवश्यकता है। दहेज की वजह से शादी का प्रस्ताव ठुकरा दिया जाता है।'बाजार–भाव' नामक प्रहसन में सेठ गंगामल व्यापारी है और हर चीज को व्यापार की दृष्टि से देखता है। कोई जगह खाली नहीं है' नाटक का मुख्य पात्र लक्ष्मी शंकर जी है। पी–एच०डी० की डिग्री लेकर बेकार है। नौकरी की तलाश करते–करते थककर, मरघट पहुँच जाते हैं।

कूटशब्द : नाटक, श्याम मोहन अस्थाना, कथावस्तु

प्रस्तावना:
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य–सहचर' में लिखा है– ''प्रतिभा यदि वास्तव में कहीं है तो वह उसी पुराने रास्ते में धूल के भीतर घसीटी नहीं जा सकती। उसकी इच्छा कानून है, वह जिधर नजर डालती है, नियम बनते जाते हें।'' आचार्य जी के इस मत के आलोक में यह बात भी समीचीन प्रतीत होती है कि प्रतिभा अपने विविध आयाम भी तैयार करती है। आचार्य जी के प्रतिभा के इस निकष पर प्रो० मोहन अस्थाना का नाट्य–साहित्य पूर्णरूपेण खरा उतरता है।
यह सुनहरी प्रतिभा का स्वर्णिम प्रभाव ही माना जा सकता है कि राजनीतिशास्त्र का अध्येता, नाट्य–साहित्य को अपना जीवन समर्पित कर देता है और जीवन के अधिकतर बहुमूल्य क्षण नाटक की सर्जना में लगा देता है। प्रो० श्याम मोहन अस्थाना के नाट्य–साहित्य के विविध आयाम को मुख्य रूप से छः भागों में विभक्त किया जा सकता है– (1) नाटक, (2) एकांकी, (3) रेडियो नाटक, (4) संगीत–नृत्य–रूपक, (5) झलकियाँ, (6) कठपुतली नाटक। 'पूर्व और पश्चिम' (नाटक); 'तवांग', 'मुजाहिद', 'जमीन जो किसी की नहीं' (एकांकी); 'एक सुबह मरी हुई', 'आखिरी रात', 'बंद गली के पार' 'अँधेरे की आवाज', 'नागफनी की डाल', 'अपराध की डेहरियों पर', 'कानूनी–सलाह', 'जरूरत है एक अदद बीबी की', 'एक लड़का और एक लड़की और झूठी खबर', 'यमराज का बीमा', 'नीलाम एक लड़के का', 'सृष्टि का अन्तिम दिन' (प्रहसन); बुद्धं शरणं गच्छामि', 'मदन–दहन', अँधेरे से उजाले की ओर', 'मित्र लाभ', 'मुर्त्तियों का नगर' (संगीत नृत्य–रूपक), 'सत्यमेव जयते' (कठपुतली–नाटक)। यह विभाजन विधा की दृष्टि से है।
प्रो० श्याम मोहन अस्थाना के नाटकों को कथ्य की दृष्टि से– राजनीतिक नाटक, सामाजिक नाटक, मनोवैज्ञानिक नाटक, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के नाटक, वैचारिक नाटक इत्यादि वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। उनके सामाजिक नाटकों की कथावस्तु निम्नवत है–

मेरा नाम मथुरा है
अखिल भारतीय नाट्य प्रतियोगिता, डेहरी में सर्वश्रेष्ठ नाटक का पुरस्कार करनेवाला, बहुचर्चित नाटक 'मेरा नाम मथुरा है', एक सामाजिक नाटक है। अस्थानाजी ने इस नाटक में साधारण जनता की समस्या को दिखलाया हैं।

'मेरा नाम मथुरा है' नाटक की पात्रा धनिया की उम्र 55 साल की है, वह अपने पति होरी को गाँव चलने के लिए बेचैन करती है। होरी और धनिया विक्रमपुर जाते हैं। गोबर होरी का लड़का है जिसकी उम्र 25 वर्ष है और उसकी पत्नी झुनिया है जिसकी उम्र 22 वर्ष है। झुनिया अपने मायके जाती है। सोमारू होरी का भाई है जिसकी उम्र 50 वर्ष है। वह मालिक की बकरी लेकर पोसता है। बकरी को मोटरवाले उठा कर ले जाते हैं। सोमाय के दिल में डर हो गया कि जमीन्दार अब उसे खूब पीटेगा। सोमारू के खून में डर प्रवेश कर गया है। जमीन्दरों के अत्याचार का भी इस नाटक में उल्लेख है। जमीन्दार से लड़ने की हिम्मत किसी में नहीं है। होरी का लड़का गोबर भी मार खाता है, खून से लथ–पथ हो जाता है। चमारों की बस्ती में आग लगा दी जाती है। बहू–बेटियों की आबरू भी खतरे में पड़ने लगती है। गोबर की पत्नी झुनिया को जमीन्दार के दरिन्दे पकड कर ले जाते हैं। झुनिया बसवाड़ी में बेहोश पाई जाती है। झुनिया अपने नाम से ही घृणा करने लगती है, वह कुछ बोलती नहीं। प्रस्तुत नाटक में अस्थानाजी ने झुनिया को एक भारतीय नारी के प्रतीक के रूप में लिया है। वह अपना नाम झुनिया न बाकर कर ''मेरा नाम मथुरा है'' बताती है। मथुरा एक आदिवासी लड़की है, जिसके साथ एक गाँव के थाने में बलात्कार किया गया था। झुनिया के साथ ही वही हुआ जो मथुरा के साथ हुआ था। इतना ही नहीं वह एक और लड़की का नाम लेती है जिसके सिर पर कलंक का टीका लगा था, वह है 'माया त्याग'। माया त्यागी उस लड़की का नाम है जिसके पति की हत्या देश के रखवाले पुलिस के वीर सिपाहियों ने की थी। माया त्यागी को बाघपत में सरे बाजार बेइज्जत किया गया था। नाटककार ने देश में हो रहे बलात्कारों के देखने हुए पूछा है कि कितनी लड़कियों को मथुरा और त्यागी के नाम से पुकारा जाएगा। अबलाओं का दामन कब तक कलंकित होता रहेगा। उन पर कब तक मनमानी होती रहेगी।

यह भी सच है

'यह भी सच है' का मुख्य पात्र चेतन एक पागल है, जो अपना सबुकछ खोकर समाज के बहशीपन से पागल बन गया है। पागलखाने में ईलाज के बाद ठीक होने पर जब वह बाहर जाना चाहता है तो उसकी स्वार्थी परिवार वाले, उसके धन के लोभ में उसे पागल करार दकर उसे ले जाने से इनकार कर देते हैं। मनुष्य के इस अमानवीय व्यवहार से दुःख हुआ वह पागल चेतन एक रात तूफान का फायदा उठाकर जेल से भाग जाता है। परन्तु इस रात में ही विभिन्न घटनाओं के माध्यम से उसे ज्ञात होता है कि बाहर की दुनिया तो पागलखाने से भी ज्यादा पागलों से भरी है।

दूसरी तरफ सरकार भी मालगुजारी माफ नहीं करती है और गाँव का ठाकुर जालिम सिंह अपने नाम के अनुसार सच में ही जालिम है। उसके पास दया या सहानुभूति नहीं है। वह बहू–बेटियों की इज्जत को सिक्कों से खरीदता है। पहले वह मजबूत औरतों पर हाथ डालता है। धीरे–धीरे शरीफ घर की बहू–बेटियों को छेड़ना भी शुरू कर देता है।

रमिया की बेटी बुधिया शहर में पढ़ती है, छुट्टियों में गाँव आती है। जालिम सिंह की नजर उस पर पड़ती है। पांचू जो बुधिया का मामा है उसे एक हजार रुपया देता है। बुधिया जालिम सिंह के गन्दे विचारों से परिचित हाती है और उसे छुरा मार देती है। पैसे के लोभ में पांचू अपनी भाँजी की इज्जत का सौदा करता है।

बुधिया जालिम सिंह की हत्या कर देती है लेकिन इस जुल्म को रमिया (बुधिया की माँ) स्वीकार करती है और बयान देती है कि उसने ही हत्या की है। रमिया के घर को ठाकुर के चाटुकार जला देते हैं और रमिया भी उसमें जलकर मर जाती है।

जब बुधिया का विवाह हुआ था, रमिया ने अपनी जमीन बेचकर दहेज दिया था। इससे भी उसकी बेटी सुख से आराम की जिन्दगी जी सके। लेकिन ससुराल वाले सन्तुष्ट नहीं होते इसलिए बुधिया को जला दिया जाता है।

इन्हीं घटनाओं से होते हुए कहानी पुनः चेतन की ओर लौट आती है। चेतन रातभर भटकने के बाद वापस आकर पागलखाने में आत्मसमर्पण कर देता है किन्तु साथ ही वह पागलखाने के सुपरिटेंडेट से उसे रिलीज करने को कहता है ताकि वह समाज में भरे दरिंदों, पागलों से उनके पागलपन का मूल्य चुका सके, उनसे बदला ले सके। इस तरह यह नाटक समाज के एक कुट सत्य से हमे रु–ब–रु' करता है।

नागफली का डाल

'नागफनी का डाल' एक मध्यमन वर्ग की कथा है। मनीषा परिवार की पतवार हैं, उम्र 32 वर्ष है और वह कॉलेज में प्राध्यापिका है। मनीषा के पिता अवकाश प्राप्त है। वे सदा बीमार रहते हैं। पेंशन से घर का गुजारा नहीं चल पाता है। इसी वजह से मनीषा को नौकरी का सहारा लेना पड़ता है। उसकी बहन मीता कॉलेज में पढ़ती है, उम्र 20 वर्ष है। लेकिन वह मनचली लड़की है। माँ पूर्वाग्रह से जुड़ी हुई है। एक छोटा भाई अरूण है जो चाय बनाने में उस्ताद है।

मनीषा अविवाहित है। विवाह करना उसके लिए समस्या है, अगर वह विवाह कर लेती है तो घर का खर्च चलना मुश्किल हो जाएगा, शायद असंभव। एक बात और है कि विवाह के लिए रुपये की आवश्यकता है। दहेज की वजह से शादी का प्रस्ताव ठुकरा दिया जाता है।

मनीषा नौकरी करनेवाली लड़की होती है, इसलिए माँ–बाप को उसकी शादी की परवाह भी नहीं रहती। मनीषा की माँ मीता की शादी करना चाहती है। मीता आजकल की लड़कियों जैसी है। एकदम नये विचारों से जुड़ी हुई है। उसे पुरानी मान्यताओं में विश्वास नहीं है। मीता की शादी की बात फैजावाद के वकील साहब के घर चलती है। उनलोगों की माँग पचास हजार नगद और अन्य माँगें हैं।

मनीषा पूरे परिवार को साथ लेकर चलनेवाली महिला है। उसने अपना र्स्वस्व न्योछावर कर दिया है। उसके माँ–बाप उससे स्वार्थ–सिद्ध करने पर तुले हैं। मनीषा कमाऊ लड़की है इसलिए उसकी शादी की चर्चा नहीं की जाती है। मनीषा की माँ जानती है कि अगर मनीषा की शादी हो जाएगी तो घर का खर्चा चलाना असम्भव हो जाएगा। शायद, इसीलिए मनीषा की माँ को उसके लिए लड़का पसन्द नहीं आता। मनीषा प्रो० भूषण को पसन्द करती है। प्रो० भूषण मनीषा के साथ ही कॉलेज में अंग्रेजी के प्राध्यापक हैं और मनीषा से शादी करना चाहते हैं, लेकिन मनीषा की माँ अपने अतीत से गहरे जुड़ी है। वह पूर्वाग्रह को लेकर चलनेवाली महिला है, पूर्वजों के इतिहास को दुहराती रहती है। मनीषा भी अपने जीवन से निराश हो गई है, परिवार का भरण ही उसके लिए सब कुछ है। उसे सारे सपने बिखर गए हैं।

जिस प्रकार नागफनी को खेती की रक्षा लिए चारों ओर से लगा दिया जाता है। उसी प्रकार मनीषा है। मनीषा के पिता अस्वस्थ होने के बावजूद नौकरी करना चाहते हैं जबकि वे ढंग से बैठ भी नहीं सकते।

'नागफनी की डाल' का समापन सुखद किया गया है। मनीषा की माँ अपने अतीत को भूल जाती है और अपनी गलतियों को समझती है तथा मनीषा और प्रो० भूषण की शादी हो जाती है।

तीन सौ सीसी खून

'तीन सौ सीसी खून' एक ब्लड डोनर की कथा है। गनेस नाम का एक मजबूर इंसान है। अपने खून का सौदा करके अपना, अपनी माँ का पेट पालता है।

गनेस एक गरीब व्यक्ति है। पहले तो वह घर का गहना और कुछ समान बेचकर रिक्शा खरीदता है लेकिन वह भयानक दुर्घटना में रिक्शा बिल्कुल टूट–फूट जाता है। तब से उसकी

हालत बिगड़ जाती है। दुर्घटना के समय एक मेम साहब रिक्शा पर बैठी थीं, उन्हें ही खून की जरूरत थी। उसी समय गनेस ने तीन सौ सीसी खून दिया था। उसके बाद जब भी अस्पताल वालों को आवश्यकता होती है, वे गनेश को बुला लेते हैं। इस तरह गनेस धीरे–धीरे खून का सौदागर बन जाता है। अगर वह खून दान नहीं करता है तो उसके शरीर में खुजली होने लगती है। मनेस ब्लड डोनर है लेकिन ईमानदार है। सीधा और व्यवहार कुशल है। कहानी आगे बढ़ती है। भाटिया अपनी गाड़ी गनेस की देखभाल में छोड़ कर अस्पताल चली जाती है। उनका मनीबैग गाड़ी की सीट पर रखा रह जाता है। गनेस की दोस्त मन्नो आती है और उसे बातों में उलझा कर बैग गायब कर देती है। चोरी का इल्जाम गनेश पर लगता है। मनेश को जेल भी हो जाती है। मनोरमा उर्फ मन्नो की उम्र लगभग 20 वर्ष है। गनेश की दोस्त और हमसफर भी है। वह गरीब है लेकिन उसके ख्वाब बहुत ऊँचे है। वह गाड़ी, बंगला, बैंक–बैलेंस सब चाहती है। उसकी यह चाहत उसे एक क्रिमिनल गैंग में शामिल होने को मजबूर करती है। जल्दी से जल्दी धन बटोरने की होड़ में वह अनेक पाप करती है। अन्त में, मन्नो का हृदय परिवर्तन होता है। वह अपनी गलतियों को स्वीकार कर लेती है। गनेश जेल से छुट जाता है और मन्नो जेल भेज दी जाती है।

बाजार–भाव

'बाजार–भाव' नामक प्रहसन में सेठ गंगामल व्यापारी है और हर चीज को व्यापार की दृष्टि से देखता है। सेठ गंगामल का इकलौता बेटा डॉ० कुमार उर्फ बच्चा जी डाक्टरी पढ़ रहा होता है। बच्चा जी की शादी के लिए हजारीमल, गंगामल, दमड़ीलाल जो देना चाहते है, वह सेठ गंगामल को कम ही लगता है। वह बच्चाजी के दहेज में वे अपनी दस लाख की कोठी को भी शमिल करते हैं। कोठी दस लाख की है तो बेटे की कीमत पाँच लाख तो होनी ही चाहिए।

सेठजी ने बच्चाजी को पढ़ाने में खर्च किया हैं उनकी अपनी भी तो कुछ हैसियत है। उनका रुतबा है। कोठी की इज्जत है।

रामलाल की बेटी लक्ष्मी डॉक्टरी पढ़ती है। मेडिकल कॉलेज के वार्षिक–उत्सव में 'शकुन्तला' का मंचन होने वाला है। उसमें कुमार जी हीरो है और लक्ष्मी हिरोहन हे।

डॉ० कुमार आधुनिक युग का खुले विचारों का युवक है। उसे क्रय–विक्रय पसन्द नहीं है। वह मालिक और नौकरी में भेद नहीं करता है। वह लड़का और लड़की में भी कोई भेद नहीं मानता है। उसकी दृष्टि में, कुमार और लक्ष्मी दोनों की कीमत बराबर है।

इस प्रहसन में समाज की ज्वलंत समस्याओं का उद्घाटन किया गया है।

कोई जगह खाली नही है

'कोई जगह खाली नहीं है' नाटक का मुख्य पात्र लक्ष्मी शंकर जी है। पी–एच०डी० की डिग्री लेकर बेकार है। नौकरी की तलाश करते–करते थककर, मरघट पहुँच जाते हैं।

लक्ष्मी शंकर पी–एच०डी० की डिग्री लेकर एक प्राइमरी स्कूल का शिक्षक भी बनने को तैयार है। लेकिन वहाँ भी कोई जगह खाली नहीं है।

सुदामा प्रसाद प्राइमरी स्कूल का शिक्षक है। उसकी मृत्यु इलाज के अभाव में हो जाती है। वह अपने पीछे एक विधवा पत्नी, तीन लड़के और पाँच लड़कियाँ छोड़ गये हैं। सुदामा बाबू का लड़का अन्त में, प्राइमरी स्कूल का टीचर बनता है। सुदामा बाबू उसे अधिकारी बनाना चाहते थे, लेकिन साधनहीन थे।

अस्थाना जी ने इस नाटक में बेकारी, भाई–भतीजावाद इत्यादि पर करारा व्यंग्य किया है।

शुद्धं शरणं गच्छामि

चंदा एक अछूत कन्या है। उसकी उम्र 16 वर्ष है। वह चांडाल की बेटी है। चन्दा और छन्दा सहेली है। चांडालों को नगर में प्रवेश की अनुमति नहीं है। दोनों साथ–साथ खेलती है।

मगध के महाराज का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जानेवाला है। उस उत्सव में भाग लेने दूर–दूर से लोग आते हैं। उसी में भाग लेने एक वणिक पुत्र भी जा रहा होता है। वह नृत्य प्रतियोगिता में शामिल होने जा रहा होता है लेकिन रास्ता भूल जाता है।

वणिक पुत्र धनंजय और चन्दा नृत्य प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। दोनों कालाकारों की खूब प्रशंसा होती है। राजा अत्यधिक खुश है। वे धनंजय को नृत्यराज घोषित करते हैं। राजा धनंजय को मुकुट पहनाते हैं। वे चंदा को भी मुकुट पहनाते हैं। लेकिन पुरोहित के अनुसार, अछूत–कन्या का शालि होना नरक के जैसा अभिशाप है। नृत्य सुन्दरी बालिका चन्दा विजय मुकुट स्वीकार नहीं करती। वह अपनी हार स्वीकार करती है।

अन्त में, चन्दा बौद्ध भिक्षुणी बनकर और बौद्ध भिक्षुओं के साथ चली जाती है।

इस प्रकार, कथ्य की दृष्टि से प्रो० अस्थाना अवश्य ही, नयी–नयी सृष्टि करते नजर आते हैं। प्रो० श्याम मोहन अस्थाना ने नाट्य–साहित्य को अपने चिन्तन और सृजन से सम्पन्न करने का सार्थक प्रयास किया है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

आधार ग्रंथ :–

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर :
2. प्रो० श्याम मोहन अस्थाना, मेरा नाम मथुरा है
3. प्रो० श्याम मोहन अस्थाना, यह भी सच है
4. प्रो० श्याम मोहन अस्थाना, नागफनी की डाल
5. प्रो० श्याम मोहन अस्थाना, तीन सौ सीसी खून
6. प्रो० श्याम मोहन अस्थाना, बाजार भाव
7. प्रो० श्याम मोहन अस्थाना, बुद्धं शरणं गच्छामिं